

## योग दर्शन में कैवल्य का स्वरूप

**चर्चित कुमार**

शोधछात्र; मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग,  
गु. कां. वि. वि. हरिद्वार

Email : [charchitbaliyan@gmail.com](mailto:charchitbaliyan@gmail.com)

**डॉ० सुरेन्द्र कुमार**

असि० प्रोफेसर; मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग,  
गु. कां. वि. वि. हरिद्वार

प्राणिमात्र की हमेशा ही यह भावना रही है कि उसके जीवन में दुःख कभी भी न आएँ। वह दुःखों से मुक्ति हेतु विभिन्न प्रकार के सिद्धान्तों का पालन करता है। परन्तु उसे पूर्ण शान्ति का अनुभव तब होता है जब वह अभ्यास और वैराग्य के द्वारा उस परम लक्ष्य अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है। जैसा कि सर्वविदित है कि योग का परम उद्देश्य है मोक्ष अर्थात् कैवल्य की प्राप्ति। कैवल्य को प्रायः सभी धर्म ग्रन्थों, संस्कृत साहित्य, वैदिक वाङ्मय, उपनिषदों, गीता एवं दर्शनों में अनेकों नामों से कहा गया है— जैसे मुक्ति, मोक्ष, कैवल्य, अपवर्ग, परमगति आदि शब्दों से मोक्ष को कहा गया है। मोक्ष वास्तव में एक ऐसी स्थिति है जब जीवात्मा जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है, तब जीवात्मा को कैवल्य अवस्था प्राप्त हो जाती है। मुक्ति की इसी अवस्था को योग दर्शन में कैवल्य शब्द से परिभाषित किया गया है।

### 1.0 मोक्ष का स्वरूप

मोक्ष के स्वरूप का उल्लेख प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में प्राप्त किया जा सकता है। जो इस प्रकार है—

### 1.1 चार्वाक दर्शन के अनुसार

चार्वाक एक नास्तिक दर्शन है। इनके मतानुसार जब तक जीयें सुख से जीयें चाहे कर्ज लेकर धी भी पीना पड़े, अर्थात् अच्छा भोजन खाओं तथा खूब मौज-मस्ती करों जीवन का यही लक्ष्य होना चाहिये। जब चिता में देह जलकर भस्म हो गयी तो पाप कर्म भोगने के लिए लौटना किसका।<sup>1</sup> यहाँ पर प्रतीत होता है कि चार्वाक की दृष्टि में काम ही परम पुरुषार्थ है, और मृत्यु मोक्ष है।<sup>2</sup>

### 1.2 जैन दर्शन के अनुसार

जैन दर्शन भी मोक्ष को चरम लक्ष्य स्वीकार करता है। जीव का पुद्गल से वियोग ही मोक्ष कहलाता है।<sup>3</sup> मोक्ष अनुभूति के लिए सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चरित्र इन तीनों को सहायक बताया है। ये त्रिरत्न ही मोक्ष प्राप्ति में सहायक है। अतः जीव अपनी स्वभाविक अवस्था को प्राप्त कर लेता है। यहाँ पर दुःखों का विनाश ही मोक्ष नहीं बल्कि आत्मा के अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति भी है।

### 1.3 बौद्ध दर्शन के अनुसार

बौद्ध दर्शन के द्वितीय आर्य सत्य में बताया है कि द्वादशनिदान दुःख के कारण रूप है। ये दुःख के कारण व दुःखों का निर्माण करने वाले हैं। तृतीय आर्य सत्य में दुःख निरोध की बात कही गयी है। यहाँ पर दुःख निरोध को महात्मा बुद्ध ने निर्वाण कहा है।

अतः भारतीय दर्शनों में जिस सत्ता को मोक्ष बताया है। उसको यहा निर्वाण की संज्ञा दी है। क्योंकि इसे जीवन का परम लक्ष्य माना गया है। यही बौद्ध धर्म का मूल आधार है।

### 1.4 सांख्य दर्शन के अनुसार

सांख्य दर्शन के अनुसार संसार में तीन प्रकार के दुःख आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक होते हैं। अतः यह संसार को दुःखमय मानता है। चिकित्सा के आधार पर हम इनसे स्थायी छुटकारा नहीं पा सकते हैं और मानव इनसे हमेशा के लिए मुक्त होना चाहता है। इन दुःखों का सम्पूर्ण विनाश ही मोक्ष है। यहाँ पर मोक्ष ही परम पुरुषार्थ है। अन्य पुरुषार्थ नाशवान है। केवल मोक्ष ही नित्य है। जब पुरुष विवेक ख्याति से स्वयं को पृथक कर लेता है, तब उसमें केवल शुद्ध ज्ञान उत्पन्न होता है और उसका अनादि मिथ्या ज्ञान संस्कार से लिप्त वासना छिन्न-भिन्न हो जाती है। प्राप्त ज्ञान से पुरुष के लिए प्रकृति निवृत्त प्रसवा अर्थात् धर्माधर्म आदि सात रूपों से विरहित हो जाता है। तत्पश्चात् पुरुष उसे प्रेक्षक दर्शक के समान देखता है। तथा उसकी लिप्त रहने की आशंका समाप्त हो जाती है।<sup>4</sup> ज्ञान के उदय से आधुनिक कर्म प्रचय दग्ध बीज के समान भोग उत्पान में असमर्थ होता है। प्रारब्ध के कर्मों को भोगे जाने पर जब शरीर समाप्त हो जाता है तब पुरुष एकान्तिक और आत्यान्तिक कैवल्य को प्राप्त करता है। जिससे दुःख सदा के लिये अस्त हो जाते हैं। यह सांख्य के मोक्ष का स्वरूप है।<sup>5</sup>

### 1.5 न्याय दर्शन के अनुसार

न्याय दर्शन में महर्षि गौतम ने न्याय के प्रथम सूत्र में बताया है कि प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, और निग्रह स्थान इन सोलह पदार्थों के तत्व ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है।<sup>6</sup> न्याय मत के आधार पर एक अवस्था ऐसी है जिसमें केवल दुःख का ही नहीं बल्कि सुखों का भी अन्त हो जाता है। मोक्ष की अवस्था को आनन्द से रहित माना गया है। अतः दुःखों के अभाव में आनन्द का भी नाश हो जाता है। आनन्द सदैव दुःख से मिलें रहते हैं। कुछ न्याय दार्शनिकों का मानना है कि आनन्द की प्राप्ति शरीर के माध्यम से होती है। शरीर का नाश होने पर मोक्ष में आनन्द नहीं होता, अपितु मोक्ष में आत्मा अपनी स्वभाविक अवस्था में होता है। वह अचेतन हो जाता है। सभी अनुभूतियाँ समाप्त हो जाती हैं। यह आत्मा की परम अवस्था है।<sup>7</sup> न्याय ने मोक्ष को आनन्द रहित माना है।

### 1.6 वैशेषिक दर्शन के अनुसार

यह दर्शन तत्व ज्ञान से मोक्ष की स्वीकृति देता है। उनका मानना है कि धर्म विशेष से उत्पन्न हुआ जो द्रव, गुण, सामान्य, विशेष और समवाय पदार्थों का साधर्म्य और वैधर्म्य तत्व ज्ञान होता है। उससे मोक्ष प्राप्त होता है।<sup>8</sup> वैशेषिक दर्शन कहता है कि आत्मा, इन्द्रियां, मन, और अर्थ के संबंध से सुख दुःख होते हैं।<sup>9</sup> मन का आत्मा में स्थित होने पर मन के कार्य को जो बन्ध कर देता है वही भोग है जो शरीर के दुःख के अभाव का हेतु है।<sup>10</sup> यह जो मरने के समय जो मन का पूर्ण देह से निकलना और दूसरे में प्रवेश करना है तथा जन्म से ही जो खाने पीने की वस्तुओं के संयोग है। तथा दूसरे शरीर का जो संयोग है वह सब मनुष्य के अदृष्ट से कराये जाते हैं।<sup>11</sup> तत्व ज्ञान से उस अदृष्ट का अभाव हो जाने पर पूर्व शरीर से संयोग का अभाव व नये का प्रकट न होना मोक्ष है।<sup>12</sup>

### 1.7 मीमांसा दर्शन के अनुसार

प्राचीन मीमांसकों ने स्वर्ग को ही जीवन का लक्ष्य माना है। परन्तु इसके विकास के साथ-साथ बाद के समर्थकों ने भारतीय दर्शनों की तरह ही मोक्ष को जीवन का लक्ष्य कहा है। इस दर्शन के मतानुसार आत्मा स्वभावतः अचेतन है। शरीर इन्द्रिय, मन का संयोग जब आत्मा से होता है। तब इसमें चेतना का संचार होता है। मोक्ष की अवस्था में आत्मा चेतन्य से शून्य हो जाती है तथा धर्म और अधर्म सदा के लिये नष्ट हो जाते हैं। जिसके फल स्वरूप वह जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है; क्योंकि धर्म-अधर्म के कारण ही आत्मा विभिन्न शरीरों में जन्म लेता है। जब यह समाप्त हो जाता है। वह मोक्ष कहलाता है। पाप से अस्पृष्ट होने के लिए मुमुक्षु को नित्य नैमित्तिक कर्म करने चाहियें।<sup>13</sup> बन्धनों से मुक्त होने का अर्थ होता

है 'प्रपंच विलय' अर्थात् इस संसार के भोग तथा भोग साधन और भोगायतन ये तीनों विलिन हो जाते हैं। यही मोक्ष है।<sup>14</sup>

## 2.0 कबीर के मतानुसार मोक्ष

संत कबीर दास जी मोक्ष को पूर्ण मुक्तावस्था मानते हैं। उनका मत है कि मोक्ष की अवस्था में जन्म मरण व सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त हो जाते हैं। कबीर विलक्षण शून्य तत्व में विलिन होने का वर्णन करते हैं।<sup>15</sup> इसी प्रकार वासना के पूर्ण क्षय कि ओर संकेत करते हैं। चेतन शक्ति का अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होना ही कैवल्य है।<sup>16</sup>

कहीं-कहीं पर कबीर दास जी मन के मन में लीन होने की भी बात करते हैं-

**कहै कबीर मन मनहि मिलावा।<sup>17</sup>**

ऊपर उद्धृत अवतरण में योग के कैवल्य भाव की छाया दिखाई पड़ती है। कबीर ने मुक्ति की अवस्था को ब्रह्माकारता की अवस्था माना है। उनका मत है कि जीव ब्रह्म स्वरूप होकर उसी के समान सत् चित् और आनन्द रूप हो जाता है। यह त्रिगुणातीत अवस्था है। इसी को प्राप्त कर भक्त मोक्ष का लाभ लेता है।<sup>18</sup> इस प्रकार कबीर की मोक्ष प्राप्ति की संबंधी धारणा योगियों के कैवल्य बोद्धों के निर्वाण आदि के प्रभावित होने पर भी पूर्ण रूप से अद्वैतवादी के अनुरूप है।

महर्षि पतंजलि कहते हैं कि अविद्या का अभाव होने पर पुरुष का जो संयोगाभाव अर्थात् बंधन की आत्यान्तिक निवृत्ति हो जाती है यही हान है। यही दृष्टा का कैवल्य है।<sup>19</sup> इसी क्रम में पतंजलि ने कहा है कि यर्थात् स्वरूप का दर्शन ही तदाद्रष्टु स्वरूप अवस्थान है।<sup>20</sup>

इस क्रम में साधारण मनुष्य यह प्रश्न कर सकता है कि क्या सामान्य मनुष्य भी मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। सर्वप्रथम यदि हम इस प्रश्न का समाधान वैदिक साहित्य में देखें तो ईशोपनिषद् में कहा गया है कि सभी प्राणी मुक्ति की अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं; क्योंकि प्रत्येक प्राणी यदि अपने सभी कर्मों को निःस्वार्थ भाव से ईश्वर को अर्पण करता है, तो उस व्यक्ति के जीवन में शोक-मोह नहीं रहता। अर्थात् वह अपने सभी कर्मों को समर्पण भाव से करता है या निष्काम भाव से करता हुआ अपनी जीवन लीला को करता चलता है। जो मुक्ति के मार्ग को प्राप्त करता है।<sup>21</sup> भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को गीता में कहते हैं कि हे अर्जुन/पार्थ जब मनुष्य शोक को त्याग कर प्रसन्नचित्त को प्राप्त होता है, तब मनुष्य के सभी दुःखों का नाश हो जाता है। तब मनुष्य की बुद्धि स्थिर हो जाती है।<sup>22</sup>

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या इस कैवल्य को प्राप्त किया जा सकता है? कैवल्य को प्राप्त करने के क्या-क्या उपाय दिये गये हैं। योग दर्शन में कैवल्य को प्राप्त करने के उपाय बताये गये हैं। क्या सामान्य पुरुष भी इन उपायों को अपना कर कैवल्य को प्राप्त कर सकता है या नहीं? इस संदर्भ में महर्षि पतंजलि जिन उपायों की चर्चा करते हैं, वह उपाय श्रद्धा-चित्त की प्रसन्नता, प्रसन्नता से उत्साह, उत्साह से स्मृति, स्मृति से चित्त कि स्थिरता व एकाग्रता, स्थिरता व एकाग्रता से ऋतम्भरा प्रज्ञा की प्राप्ति होती है।<sup>23</sup> चित्त स्थिरता के विषय में साधारण मनुष्य का यह प्रश्न हो सकता है कि क्या साधारण मनुष्य का चित्त भी स्थिर हो सकता है या नहीं?

इसी विषय में महर्षि पतंजलि कहते हैं कि जिस मनुष्य का जो भी द्रष्ट साध्य हो वह उसी द्रष्ट साध्य की साधना में अपने मन का लगायें।<sup>24</sup> इस प्रकार द्रष्ट के ध्यान में मन को लगाने से भी चित्त स्थिर हो जाता है। इसका यह लाभ होता है कि साधक का मन विचलित नहीं होता और वह ध्यान में मग्न हो जाता है। जिससे साधना में विघ्न बांधा नहीं आती और वह साधना की एकाग्र अवस्था को प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार द्रष्ट साधना का यह फल होता है। महर्षि पतंजलि का लक्ष्य है कि सामान्य मनुष्य को भी

योग मार्ग पर आरूढ़ करना है। इसी का लक्ष्य करके भगवान श्री कृष्ण ने गीता में साधारण मनुष्य को केन्द्रित करके ही उपदेश देते हुए कहते हैं कि राजा जनक साधारण मनुष्य से ही अपने जीवन की यात्रा शुरू कर विदेह पद को प्राप्त होते हैं। क्योंकि राजा जनक भी द्रष्ट साधना के द्वारा ही विशिष्ट अवस्था को प्राप्त करते हैं।<sup>25</sup> विषयनुसार अब यह प्रश्न उठता है कि कैवल्य को प्राप्त करने के लिए योग दर्शन में महर्षि पतंजलि ने क्या-क्या उपाय बताये हैं। क्या ये उपाय एक साधारण मनुष्य को भी कैवल्य की प्राप्ति करा सकते हैं?

महर्षि पतंजलि कहते हैं कि अभ्यास और वैराग्य कैवल्य प्राप्त करने वाले साधक के लिए प्रथम सीढ़ी है या यह कह सकते हैं कि यह प्रथम अवस्था है।<sup>26</sup> अभ्यास को समझाते हुए महर्षि पतंजलि कहते हैं कि मन की स्थिरता का अभ्यास दीर्घ काल तक निरन्तरता पूर्वक तथा श्रद्धा पूर्वक नियम से करने से ही दृढ़ होता है।<sup>27</sup> इस प्रकरण में हम यहाँ हठयोग प्रदीपिका में जो अभ्यास का स्वरूप बताया गया है, उसकी चर्चा की जा सकती है। वहाँ कहा गया है कि चाहें व्यक्ति जवान हो, बूढ़ा हो, रोगों से ग्रस्त हो या दुर्बल हो सभी स्थिति में अभ्यास के द्वारा सिद्धि की प्राप्ति की जा सकती है।<sup>28</sup>

अभ्यास के विषय में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन अभ्यास में रमण करते ही व्यक्ति के सभी दुःखों का अन्त हो जाता है। अर्थात् उसके जीवन में सुखों की प्राप्ति हो जाती है।<sup>29</sup> इसी क्रम में वैराग्य नामक उपाय का वर्णन करते हुए भाष्य कार व्यास कहते हैं कि ज्ञान की पराकाष्ठा ही वैराग्य कहलाती है।<sup>30</sup> इसी कारण हम कह सकते हैं कि ध्यान को सर्वोत्कृष्ट सिद्ध करने के कारण ही गीता का एक अध्याय ज्ञान-कर्म संयास नाम से जाना जाता है। क्योंकि ज्ञान ही मुक्ति का सर्वोत्कृष्ट साधन है।<sup>31</sup> इसी संदर्भ में सांख्य दर्शनाकार कहते हैं कि ज्ञान ही मुक्ति का कारण है अर्थात् व्यक्ति को बंधनों से मुक्त करने वाला है एवं अज्ञान या अविद्या ही बन्धन का कारण है।<sup>32</sup> महर्षि इसी क्रम में मोक्षाभिलाषी साधक को कैवल्य प्राप्ति के उपाय में तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्राणिधान क्रिया-योग को भी अपनाना चाहियें।<sup>33</sup> इसी क्रम में महर्षि पतंजलि कैवल्य के स्वरूप के विषय में योग दर्शन के विषय में कहते हैं कि अविद्या के प्रभाव से जो बुद्धि और पुरुष का संयोगाभाव है वही द्रष्टा का कैवल्य है। क्योंकि बंधन का कारण अविद्या है एवं ज्ञान ही कैवल्य का कारण है;<sup>34</sup> क्योंकि ब्रह्म निष्ठ साधक परवैराग्य द्वारा विवेक ज्ञान से भी किसी फल की इच्छा नहीं करता, तो इसके विरक्त हो जाने पर वैराग्यवान योगी की विवेक ख्याति प्राप्त हो जाती है। इसी के कारण संस्कारों के बीज सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं। महर्षि पतंजलि कहते हैं कि पुरुष शून्य गुणों का प्रतिप्रसव (पुनः उत्पत्तिहीन लय) कैवल्य है। अतः चित्ति शक्ति का अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होना ही कैवल्य है।<sup>35</sup>

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि मोक्ष की प्राप्ति हेतु योग दर्शन एवं अन्यान्य दर्शनों का विशेष महत्व है, अर्थात् योग में वर्णित अभ्यास और वैराग्य आदि के द्वारा तथा चित्तवृत्तियों का निरोध करके साधक कैवल्य को प्राप्त कर सकता है।

### 3.0 संदर्भ-ग्रन्थ

<sup>1</sup> यावज्जीवेत्सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् ।

भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥

<sup>2</sup> मरणमोक्षोपवर्णः । भारतीय दर्शन का इतिहास - पृ. 60

<sup>3</sup> भारतीय दर्शन का इतिहास - पृ. 49

<sup>4</sup> तेन निवृत्तप्रसवार्थवशात् सप्तरूपविनिवृताम् ।

प्रकृतिं पश्यति पुरुषः प्रेक्षकवदवस्थितः स्वस्थः ॥

सांख्यकारिका - 65

<sup>5</sup> पुरुषार्थज्ञानविदम् गुह्यं परमर्षिणा समाख्यातम् ।

स्थित्युत्पटितप्रलयाश्चिन्त्यन्ते यत्र भूतानाम् ॥

सांख्यकारिका - 69

<sup>6</sup> न्याय दर्शन - 1.1.1

<sup>7</sup> भारतीय दर्शन की रूपरेखा, पृ. 188-189

<sup>8</sup> धर्मविशेषप्रसूताद् द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायानां पदार्थानां साधर्म्यवैधर्म्याभ्यां तत्त्वज्ञानान्वितः श्रेयसम् ।

वैशेषिक दर्शन - 1.1.4

9	आत्मेन्द्रियमनोऽर्थसन्निकर्षात् सुखदुःखो ।	वैशेषिक दर्शन – 5.2.15
10	तदनारभ्य आत्मस्थे मनसि शरीरस्थ दुःखभावः स योगः ।	वैशेषिक दर्शन – 5.2.16
11	अपसर्पणमुपसर्पणमशितभीतसंयोगाःकार्यान्तरसंयोगाश्चेत्य दृष्टादितानि ।	वैशेषिक दर्शन – 5.2.17
12	त्वभावे संयोगभावोऽप्रादुर्भावच्च मोक्षः ।	वैशेषिक दर्शन – 5.2.18
13	मोक्षार्थी न प्रवर्तेत तत्र काम्यनिषिद्धयोः नित्यनैमित्तिके कुर्यात्प्रत्ययवाच जिहासया ।	मीमांसा दर्शन
14	त्रिविधस्यापिबन्धस्यात्यन्तिको विलयमोक्षः ।	शास्त्रदीपिका – पृ. 125
15	मन जीते जग जीतिया ते विषयति होय उदास ।	कबीर ग्रन्थावली – पृ. 308
16	बहुरि हम काहे कू अविहिंगे, ऐसे हम दिखलाविहिंगे ।	कबीर ग्रन्थावली – पृ. 137
17	कबीर ग्रन्थावली – पृ. 102	
18	चौथे पद को जे जन चीन्है, तिनहि परम पद पाया ।	कबीर ग्रन्थावली – पृ. 184
19	तद्भावात्संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम् ।	पातंजल योगदर्शन – 2/25
20	तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम् ।	पातंजल योगदर्शन – 2/25
21	यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।	
22	तत्र को मोह कः शोक एकत्वमनु पश्यतः ।	ईशावास्योपनिषद् – 7
23	प्रसादे सर्वदु खानां हानिरस्योपजायते ।	
24	प्रसन्नचेतसोऽह्माशु बुद्धि र्पवतिष्ठते ।।	गीता – 2/65
25	श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम् ।	पातंजल योगदर्शन – 1/20
26	यथाभिमतध्यानाद्वा ।	पातंजल योगदर्शन – 1/20
27	कर्मणैव संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।	गीता – 3/20
28	अभ्यासवैराग्याभ्यामं तन्निरोधः ।	पातंजल योगदर्शन – 1/20
29	स तु दीर्घकालनैरन्तर्यसत्काराऽसेवितो दृढभूमि ।	पातंजल योगदर्शन – 1/14
30	युवावृद्धोऽतिवृद्धोवा व्याधितो दुर्बलोऽपि वा ।	
31	अभ्यासात्सिद्धिमाप्नोति सर्वयोगेष्वतन्द्रितः ।।	हठयोग प्रदीपिका – 1/64
32	अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ।	गीता – 3/20
33	ज्ञानस्यैव पराकाष्ठा वैराग्यम् ।	व्यासभाष्य योगदर्शन – 1/16
34	ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते ।	
35	न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।।	गीता – 4/37-38
36	ज्ञानान्मुक्तिः बन्धो विपर्ययात् ।	सांख्य दर्शन – 3/23-24
37	तपःस्वाध्यायेश्वाप्रणिधानानि क्रिययायोग ।	पातंजल योगदर्शन – 2/1
38	तद्भावात्संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम् ।	पातंजल योगदर्शन – 2/25
39	पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं ।	
40	स्वरूपप्रतिष्ठा वा चित्तिराक्तेति ।।	पातंजल योगदर्शन – 4/34